कुलगीत

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, विमल शिक्षा सदन ।
बलिया का आध्यात्मिक क्षितिज गङ्गा का पावन संगमन ।1।

यह नवल नालन्दा, विमल विज्ञान-ज्ञान-कला-निलय ।
है लक्ष्य जिसका–प्रेम से लौकिक विषमता का शमन ।2।

यह जाति-वर्ग-विभेद से परिमुक्त, है गुरुकुल नवल ।
राष्ट्रीयता, नवबन्धुता का कर रहा है पल्लवन ।3।

स्नातक बनें परिपूर्ण मानव खण्ड-चिन्तन हो नहीं ।
बोलें, चलें, सोचें सभी इक संग, तुल्य सदाचरण ।4।

अध्यात्मरस से सींच कर सबको यथोचित ज्ञान दे ।
संस्थान है यह कर रहा प्रस्थान का नूतन सृजन ।5।

यह रम्य पूर्वांचल, दिशा यह दीप्त उदयादित्य की ।
कर्मस्थली जिन-बुद्ध की यह लोकसंस्कृति का भवन ।6।

यह मृत्तिकाचषकों में ज्ञानामृत पिलाती भूमि है ।
यह लोक भी है, वेद भी है सर्वधर्म-समन्वयन ।7।

इस रम्य विद्याभूमि से ऐसी फसल तैयार हो ।
जो विषमता को तोड़ समता का कराए आचमन ।8।

हो नित विजयिनी शारदा श्री चन्द्रशेखर हों अमर ।
बलिया कलित हो कीर्ति से भृगु-दर्दरी का आभरन ।9।

रचनाकार–प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

Scanned with CamScanner